मुस्लिम फॉर सेक्युलर डेमोक्रेसी ने कहा–

इमाम बुखारी और सुदर्शन एक ही सिक्के के दो पहलू

H.M (1) 7/10/03 ■ संवाददाता

मुंबईः शाही जामा मस्जिद के इमाम अहमद बुखारी और सरसंघचालक के.एम. सुदर्शन दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं. ये दोनों अपने भड़काऊ भाषण से सांप्रदायिक उन्माद भड़काकर मुस्लिम और हिंदू समाज के ठेकेदार बनना चाहते हैं. यह आरोप है 'मुस्लिम फॉर सेक्युलर डेमोक्रेसी' (एमएसडी) का. (शेष पृष्ठ १२ पर)

इमाम बुखारी (पृष्ठ १से) H.M. (12) 7/10/03

ज्ञात हो कि ४ अक्तूबर को मुंबई में दिये गये अपने भाषण में शाही इमाम अहमद बुखारी ने अमरीका में ११ सितंबर को हुए हमले को सही ठहराते हुए कहा कि फिलिस्तीन और अफगानिस्तान के तथा दुनिया के कई हिस्सों में मुस्लिम समुदाय पर होने वाले जुल्म के लिए आज भी अमरीका अपनी गलती नहीं मान रहा है.

दूसरी ओर उसी दिन दशहरा के अवसर पर नागपुर स्थित आर.एस.एस. के मुख्यालय पर सुदर्शन अपने भाषण में राष्ट्रीय मानवाधिकार पर खूब बरसे उनका मानना था कि बेस्ट बेकरी कांड के मामले में मनवाधिकार आयोग ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दाखिल करके गलत किया है.

एम.एसडी का कहना है कि बुखारी और सुदर्शन ने मरने वालों के लिए एक शब्द भी नहीं कहा. जो लोग अमरीका में हमले में मारे गये वह भी बेगुनाह थे और जो बेस्ट बेकरी कांड में मारे गये वह भी बेगुनाह थे लेकिन सुदर्शन और बुखारी को अन बेगुनाहों से क्या लेना देना. वे तो अपने-अपने धार्मिक उन्माद भड़काने में ही दिलचस्पी रखते हैं. मुस्लिम फॉर सेक्युलर डेमोक्रेसी का मानना है कि यह राज्य सकार की जिम्मेदारी है कि वह शांतिप्रिय नागरिकों के जीवन और उनकी संवैधानिक स्वतंत्रता की रक्षा करे तथा समाज का वातावरण खराब करने वालों अथवा सांप्रदायिक द्वेष बढ़ाने वालों को सजा दे.

एमएसडी ने कहा है कि शाही इमाम अहमद बुखारी अपने जहरीले भाषणों से मुस्लिम समुदाय की छवि को दूषित कर रहे हैं. अब जबकि कई राज्यों में विधानसभा चुनाव करीब आ रहे हैं बुखारी और सुदर्शन अपने भड़काऊ भाषणों से सांप्रदायिक सौहार्द को बिगाड़ कर अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करके मुस्लिम और हिंदू मतों के ठेकेदार बनना चाहते हैं जबकि इनको यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिए अब जनता इन्हें समझ चुकी है अब जनता को ये लोग मूर्ख नहीं बना सकते हैं.